विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

पुराने वनों का संरक्षण सबसे बड़ा प्राकृतिक जलवायु समाधान है

ऐसे वन जो विकास के उन्नत चरण में हैं या जहाँ विविध प्रजातियों के पुराने, मोटे और बड़े वृक्षों की बहुतायत है उन्हें दुनिया प्राइमरी फॉरेस्ट्स या ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के नाम से जानती है। ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बड़ी शोध हुई है। ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गड़बड़ी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड़, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पड़े संचित सूखे तने, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बड़े वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्राय: देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों के कीड़े-मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कीड़ों की प्रजातियां बड़ी संख्या में सूखी गिरी पड़ी लकड़ी पर निर्भर होती हैं।

ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्राय: कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटान नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रुप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्राय: यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियां मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्राय: बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहां प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरे में डालते हैं। कृषि, लकड़ी के लिये कटान, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर की गयी, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विक्षोभ और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369):378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगड़े वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत ख़राब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त एवं अन्य शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है (देखें, जे. बार्लो इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 104(47):18555-18560, 2007)।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से 26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रुप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्राय: सतही आग ही लगी है। इससे बड़े वृक्षों को भले ही हानि ना होती हो, किंतु बीजों, बिजौलों व प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बड़ी हानि पहुंचती है। क्लाइमेट चेंज की दशा में आर्द्र तराई क्षेत्रों के वनों में हर जगह पुराने जंगलों में जमीन के ऊपर के जैवभार (बायोमास) में कमी आने की भारी आशंका है। उष्ण कटिबंध में वर्ष 2081-2100 के मध्य तक तापमान बढ़ने के कारण इस कमी का अनुमान 41 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 29 प्रतिशत है (देखें, एम. लर्जावारा इत्यादि, कार्बन बैलेंस एंड मैनेजमेंट, 16(1):31, 2021)।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्व रखता है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्व रखता है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकड़ों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटीगेशन के लिएयह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्स्येर्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलेंगेलो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अन्य क्षेत्रों में वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रुप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्जर्वेशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये देश के विभिन्न राज्यों में सभी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहां सूखी गिरी पड़ी लकड़ी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक हैं।

यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहां खुले स्थान मिल रहे हैं वहां पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती हैं। ऐसी प्रजातियां प्राय: बड़े बीजों वाली और चौड़ी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बड़े शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और डंडारोपण करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेड़ा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोड़ा, बीजासाल, खाखरा, कड़ाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदू, बिस्तेंदू, गोदल, ऊंबिया, इमली, सागवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोट, अरीठा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैथगूलर, पीपल, कैर, लिसोड़ा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

चूंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स का दायरा धीरे धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में बीजारोपण व बहुत आवश्यक हो तो वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहां प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां पर अर्ली-सक्सेशनल, मिड- सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण की मृदा व जल संरक्षण के साथ सीधी बुवाई किया जाना उपयोगी रहेगा। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी पूरे वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय वनों और जैव-विविधता से मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हेतु पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

भागचंद जैन मित्रपुरा

इस जंबूद्वीप, भरत क्षेत्र काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें कश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम ब्राह्मी था। जब सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी, तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की बरसात शुरू कर दी थी। रानी ब्राह्मी ने सोलह स्वप्नपूर्वक वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन इन्द्र के जीव को गर्भ में धारण किया था। नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ। इन्द्रादि देवों ने सुमेरू पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' नामकरण किया। इनकी आयु सौ वर्ष की थी। प्रभु की कांति - देहवर्ण मरकट मणि सदृष्य हरितवर्ण थी एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे। भगवान पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष की अल्पायु में ही तप धारण कर लिया था।

सोलह वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ एक दिन अपने इष्ट मित्रों के साथ वन में गए हुए थे, तब मार्ग में पंचाग्नियों में तप करता हुआ एक साधु मिला, वह अग्नि को प्रदीप करने के लिए कुल्हाड़ी से एक मोटी लकड़ी को काटना चाह रहा था। अवधी ज्ञान से जानकर भगवान पार्श्व ने लकड़ी को काटने के लिए मना किया और कहा–इसके भीतर 2 प्राणी बैठे हुए हैं। किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे। पीड़ा से तड़पते हुए सर्प के जोड़े को भगवान पारसनाथ ने शांत होने का उपदेश दिया और उन्हें पंच नमस्कार (णमोकार महा मंत्र) मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वे शांतभाव को प्राप्त हुए तथा महा विभूति के धारक धरणेन्द्र और पद्मावती हो गये। इधर कमठ का जीव महिपाल भी मरकर स्वर्ग का शम्बर नाम का ज्योतिषी देव हुआ।

अनंतर कुमार जब तीस वर्ष के हो गये, तब एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन ने उत्तम घोड़ा आदि की भेंट के साथ अपना दूत भगवान पार्श्वनाथ के पास भेजा। भगवान ने भेंट लेकर उस दूत से अयोध्या की विभूति पूछी। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पश्चात् अयोध्या का हाल कहा। उसी समय ऋषभदेव के सदृश स्वयं को भी तो तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ है, लेकिन सामान्य मनुष्य की तरह अपनी आयु के 30 वर्ष व्यर्थ गवां दिए यह विचार करते हुए पार्श्वनाथ को आत्मज्ञान प्राप्त हो गया और विषय वासना को छोड़कर दीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्व वन में पहुँच गये। वहाँ त्रिदिवसीय उपवास का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रात:काल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करके प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। प्रथम पारणा के दिन गुलमसेटपुर में प्रवेश किया। नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगल द्रव्यों से प्रभु का पड़गाहन कर प्रथम पारणा पायस का आहार करवाया। आहार से प्रभावित होकर देवों ने धन्य राजा के घर पंचाश्चर्य प्रकट किए। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान अश्ववन में पंहुचकर देवदार वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव कालसंवर नाम का ज्योतिषी देव आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात् उसका विमान रुक गया, उसे विभंगावधि से पूर्व का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। बदले की भावना से क्रोधवश महागर्जना, महावृष्टि, तूफान आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया। बड़े-बड़े पहाड़ तक लाकर तप में लीन पार्श्वप्रभु के समीप गिराये इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया। अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र और पद्मावती पृथ्वी तल से बाहर निकलकर भगवान को सब ओर से घेरकर धरणेन्द्र ने अपने फणों के ऊपर उठा लिया और पद्मावती वङ्कामय छत्र तान कर खड़ी हो गई। इस तरह स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प-सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रख कर तपस्या में लीन भगवान पर उपसर्ग के समय रक्षा की।

तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्म क्षीण हो गया और बैरी कमठ का सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्श्वनाथ ने चैत्र कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रात:काल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। उसी समय इन्द्रों ने आकर समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। कालसंवर नाम का देव भी काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति-भक्ति की। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कहाँ तो निष्कारण वैर और कहाँ शांति। इसलिए संसार के दु:खों से भयभीत प्राणियों को वैर-विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। पार्श्वप्रभु ने 83 दिन की कठोर तपस्या के पश्चात 84वे दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था।

भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण में स्वयंभू सहित दस गणधर, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना आदि सहित छत्तीस हजार गणिनि आर्यिकाएँ, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए भगवान ने उनहत्तर वर्ष सात माह तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार करना बंद हो गया। प्रभु पार्श्वनाथ सम्मेदाचल के शिखर पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रात:काल के समय विशाखा नक्षत्र में अष्ट कर्मों का नाश कर सिद्धपद को प्राप्त हो गये। देवों ने भक्ति पूर्वक उनके निर्माण कल्याण का उत्सव किया। इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में भी मनाया जाता है एवम अपना भव कल्याणकारी बनाने की दृष्टि से कन्याएं व्रत/उपवास रखती है। यद्दिप उपवास/व्रत कोई भी रख सकता है। श्री पार्श्वनाथ ने ही जैन धर्म के पंच महाव्रत की शिक्षा दी जिनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, एवम अपरिग्रह जिसमे ब्रह्मचर्य भी सम्मिलित है। अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का समावेश एक ही व्रत में होता था।

श्री पार्श्वनाथ ने ही चतुर्विध संघ की स्थापना की थी जिनमे मुनि, आर्यिका, श्रावक एवं श्रविका होते थे। आज भी जैन समाज की यही परंपरा जारी है। भगवान पार्श्वनाथ ने जैन धर्म को जन जन के बीच लोकप्रिय बनाकर एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य कर गए, जिसकी आभा आज भी जीवंत है। भूगर्भ प्रकट होने वाली प्रतिमाएं एवं जिन मंदिरों में विराजित सबसे ज्यादा प्रतिमाएं तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की ही है।

संकलन--भागचंद जैन
मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम जयपुर।

राज्यपाल किसनराव बागड़े ने मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन किया

राज्यपाल बागड़े ने बीएसएफ जवानों की हौसला अफजाई कर पराक्रम की सराहना की

बाड़मेर, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने शनिवार मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन कर बीएसएफ के जवानों से संवाद किया। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने राष्ट्र सेवा में जवानों की तत्परता के लिए उनकी हौसला अफजाई करते हुए पराक्रम की सराहना की। मुनाबाव में प्रहरी सम्मेलन के दौरान राज्यपाल बागड़े ने कहा कि सैनिक सरहद की हिफाजत के लिए सतर्क है। वे विपरित परिस्थितियों में देश सेवा के लिए तत्पर है।

उन्होंने देश के प्रति प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा के लिए जवानों का नमन करते हुए कहा कि वे अदम्य साहस के लिए सैनिकों का अभिनंदन करते हैं। उन्होंने चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊ और तेरा वैभव अमर रहे मां, मैं रहूं या ना रहूं का जिक्र करते हुए कहा कि जवानों के समर्पण की बदौलत भारत सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि जाबाज सैनिक मां भारती के वह सपूत है, जिनके कंधे पर राष्ट्र की सुरक्षा का भार है। इस दौरान उन्होंने सीमा सुरक्षा बल एवं अन्य सुरक्षा एजेंसियों की सुरक्षा समन्वय संबंधित बैठक के दौरान सीमा प्रबंधन सरहद पार से तस्करी एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने सरहद पर रहने वाले ग्रामीण परिवारों की सराहना करते हुए राष्ट्र की सुरक्षा में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। राज्यपाल बागड़े ने सीमा सुरक्षा बल के जवानों को मिठाई एवं फल भेंट किए। सीमा सुरक्षा बल की ओर से राज्यपाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। उन्होंने मुनाबाव में कांफ्रेस हॉल के पास एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया। इससे पहले राज्यपाल के मुनाबाव पहुंचने पर बीएसएफ के जवानों गार्ड ऑफ आनर दिया।

इस दौरान बीएसएफ गुजरात फ्रंटियर के महानिरीक्षक अभिषेक पाठक, उप महानिरीक्षक राजकुमार बसट्ठा, जिला कलेक्टर निशान्त जैन, पुलिस अधीक्षक नरेन्द्रसिंह मीना, मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ पलनीचामी, शिव विधायक रविन्द्रसिंह, समाजसेवी स्वरूपसिंह खारा सहित विभिन्न सीमा सुरक्षा बल एवं विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी, जवान आदि उपस्थित रहे।

बाड़मेर में भारत-पाक सीमा पर राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने सेना के जवानों से मुलाकात की।

राज्यपाल ने जन संवाद के साथ ग्रामीणों की सुनी परिवेदनाएं : बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुंचे राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने तामलोर ग्राम पंचायत में ग्रामीणों से जन संवाद करते हुए जानकारी ली कि उनको प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के साथ कौनसी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि उनके खातों से डीबीटी के जरिए राशि जमा हो रही है। इस दौरान ग्रामीणों ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने, मुनाबाव को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने समेत विभिन्न प्रकार की परिवेदनाओं से अवगत कराया। राज्यपाल बागड़े ने राउमावि तामलोर में अतिरिक्त कक्षा कक्ष एवं कंप्यूटर कक्ष का निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यालय के परीक्षा परिणाम के बारे में जानकारी लेते हुए दसवीं कक्षा में अनुतीर्ण हुए विद्यार्थियों का दुबारा अध्ययन सुनिश्चित करवाने के निर्देश दिए। इस दौरान राज्यपाल बागड़े ने विद्यार्थियों के साथ हर घर तिरंगा अभियान का संदेश देते हुए ग्रुप फोटो खिंचवाया। उन्होंने कहा कि हर घर पर तिरंगा अवश्य फहराएं।

प्रधानाचार्य के जन्मदिन पर छात्र-छात्राओं ने पौधे लगाये

स्वामी विवेकानंद राज.मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल की

निवाई, (निसं)। स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल करते हुए प्रधानाचार्य कुंभाराम चौधरी 57वें जन्मदिवस पर 51 छायादार पौधे लगाकर सराहनीय कार्य किया। प्रधानाचार्य ने बताया कि अब प्रत्येक कर्मचारी और विद्यार्थी अपने जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष पांच वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देंगे।

इस दौरान सभी विद्यार्थियों और शिक्षक साथियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी। उन्होंने आव्हान करते हुए कहा कि ऐसे ही विवेकानंद मॉडल विद्यालय उन्नति और तरक्की करता रहे और नए-नए आयाम और कीर्तिमान स्थापित करता रहे।

- **विद्यार्थियों और शिक्षक साथियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी**

इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य ललित कुमार बेनीवाल, व्याख्याता विनोद कुमार शर्मा, विकास गुर्जर, कमलसिंह गुर्जर, योगेश शर्मा, अंकिता राजावत, जीशान अहमद, हनुमान गुर्जर, मदनमोहन मीणा, राजवीर चौधरी, रमेशचंद मीणा, आरती तिवारी, कुंती शर्मा, दिव्यानी शर्मा, सोनू सोनी, सुदेश बाई, सुनीता गुर्जर, अमित कुमार शर्मा व निकलेस सैन सहित छात्र-छात्रायें व समस्त स्टाफ मौजूद था।

राशिफल रविवार 11 अगस्त, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र सोमवार प्रात: 8:33 तक, शुभ योग दिन 3:48 तक, गर करण सांय 6:51 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध अस्त पश्चिम में सांय 6:07 पर होगा। आज भानु सप्तमी, महापात योग दिन 10:12 से दिन 2:55 तक है। आज से कल्याण धणी, डिग्गीपुरी पद यात्रा आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:38 से 9:16 तक, लाभ-अमृत 9:16 से 12:32 तक, शुभ 2:10 से 3:48 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

धनु
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन में बना भय दूर होगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक और व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है। आर्थिक समस्या अभी बनी रहेगी। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।